E-Content for student of Patliputra University Patna

course -BA Hon's part 3

subject- Hindi ,paper 6 unit 1

Topics—काव्य के हेतु कौन-कौन से हैं?

-डॉ प्रफुल्ल कुमार ,एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष हिन्दी विभाग,आर आर एस कॉलेज मोकामा।पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना

काव्य निर्माण के कारणों पर भी विस्तारपूर्वक विचार किया गया है ।कवि लोक का अनुशीलन करते हुए उसकी विभूति से प्रभावित होता है और तब कवि नमें छिपी हुई शक्ति प्रस्फुटित होती है ।कवि इस शक्ति का ठीक-ठीक उपयोग उसी अवस्था में कर सकता है, जब वह व्यवस्थित रूप में मनोगत रूपों एवं स्थितियों को कहने की भी शक्ति रखता हो।

इस प्रकार काव्य निर्माण के तीन हेतु प्रतीत होते हैं- एक तो कवि की शक्ति दूसरा उसका लोक निरीक्षण और तीसरा अभ्यास। काव्य की शक्ति इन तीनों में

महत्वपूर्ण मानी जाती है ।इसका कारण यह है कि यह ऐसी चीज है जो काव्य वृक्ष के रूप में फलता फूलता दिखाई देता है ।इसी बात को ध्यान में रखकर पश्चिमी देशों में कहा जाता है कि कवि का उद्भव होता है निर्माण नहीं पुराने भारतीय ग्रंथों में भी यह बात स्वीकृत की गई है ।यह कहा गया है कि संसार में मनुष्य दुर्लभ है,मनुष्य होने पर भी विद्या की प्राप्ति दुर्लभ है और विद्या की प्राप्ति होने पर भी कवित्त दुर्लभ है।और कवित्त प्राप्त होने पर भी शक्ति दुर्लभ है।

"नरत्त्वं दुर्लभं लोके

विद्या तत्र सुदुर्लभा

कवित्वम दुर्लभं तत्र

शक्ति स्तत्र सुदुर्लभा।"

यह शक्ति दो प्रकार की होती है। एक सहजा और दूसरी उत्पाद्या। कवि में उसके जन्म के साथ ही ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जिसके कारण वह कविता करने में अभिरुचि रखता है और बहुत छोटी अवस्था से ही कुछ न कुछ कविता करने लगता है। जितने बड़े-बड़े

कवि हो गए हैं उनके बाल काल के चरित्र बतलाते हैं कि वह बहुत छोटी अवस्था से ही कुछ-कुछ कुछ कविता रूप में लिखने लगे थे। शैशवावस्था की यह चमक क्रि सहज शक्ति के ही कारण होती है।

उत्पाद्या वह शक्ति है जो उपार्जित की जाती है ।इस शक्ति के अंतर्गत निपुणता और अभ्यास दोनों आते हैं। निपुणता तीन प्रकार से आती है। लोक का निरीक्षण ,शास्त्रों का अनुशीलन और कार्य परंपरा का अध्ययन करने से। लोकनिरीक्षण इसलिए आकर्षक होता है कि लोक ही काव्य पीठिका है। जिस प्रकार बिना दृढ़ नीव के प्रासाद का निर्माण असंभव है उसी प्रकार लोक निरीक्षण के अभाव में काव्य का महल भी असंभव है। लोक निरीक्षण के संबंध में दो बातें ध्यान देने योग्य है- पहली निरीक्षण वस्तु के स्वरूप हृदयंगम करने की शक्ति और दूसरी प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को डालकर उसकी अनुभूति कर सकने की क्षमता पहली के अनुसार आलंबन या वर्ण्य विषय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्ञान अपेक्षित है और दूसरी के अनुकूल भाव ग्राहकता। से पहली में बुद्धि तत्व का योग है और दूसरी में हृदय

तत्व का प्रथम ज्ञान प्रधान और दूसरी भाव प्रधान निरीक्षण के हेतु बोधवृति तथा राग वृत्ति दोनों का योग आवश्यक है ।

लोग निरीक्षण के साथ-साथ शास्त्रानुशीलन आवश्यक है ।शास्त्र के अनुशीलन करने से भावाभिव्यक्ति की प्रणालियों शैलियों एवं विधियों का ज्ञान मिलता है। इसके अभाव में काव्य की रचना सफल नहीं हो पाती है ।कहा गया है कि कवि की आंखें नहीं खुलती। इसलिए शास्त्र का अध्ययन कवि कर्म कर्ता अंधा है। नत्रों के रहने पर विषय का ग्रहण जिस सरलता और सुक्ष्मता से हो सकता है अंधा होने से नहीं हो सकता है। शास्त्र का अध्ययन सरलता पूर्वक विषय की सुक्ष्मता। और शुद्धता की उपलब्धि है ।अनावश्यक पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं।।

शास्त्रानुशीलन के अंतर्गत काव्य परंपरा का अध्ययन भी किया जाता है ।परंपरा का अध्ययन अपनी पहचान के साथ निर्माण की सुगमता के लिए है। परंपरा छोड़ कर चलने से बेमेल रचना होने लगती है ।रचना करना

बाढ़ आई नदी पार करना है। परंपरा का ज्ञान वहाँ पुल का काम करता है। तुलसीदास जी ने लिखा है -

"अति अपार ये सरितवर ज्यों नृप से तु कराहिं। चढ़ि पिपलि ठउ परम लघु विमिश्रम पारहि जाहिं।"

पुल से पार नहीं जाना चाहने वाला चाह कर भी या तो नदी में उतरने का साहस नहीं करेगा या फिर उतर कर बहते बहते न जाने किस किनारे पर लग जाएगा ।पार तक पहुँचना तो दूर की बात। संभव है कि उसकी लुटिया ही डूब जाए ।

अब अभ्यास पर विचार करना चाहिए । अभ्यास के बिना कविता हो तो सकती है परंतु व्यवस्थित नहीं हो सकती है। यही कारण है कि संस्कृत और हिन्दी के पुराने कवि गुरु के यहां अभ्यास किया करते थे। उर्दू के शायर भी उस्तादों से इस्लाह सलाह लिए बिना मजलिस में अपनी शायरी नहीं सुनाते ।इस प्रकार काव्यके 3 गुण लिखे गए हैं। उनका एक साथ होना आवश्यक है।

हिन्दी के कवि भिखारी दास ने इन्हें काव्य के रूपक द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया है-“

“शक्ति कवित्त बनाइसेहि।

जिंहिं जन मन क्षत्र में दिन्ही विधाते।

काव्य की रीति सीखी सुकबीर नसौं।

देखी सुनी बहू लोक की बानै।

दासजू जाने एकत्र तीनि।

बनै कविता मन रोचक तातै।

एक बिना मन चले रथ।

जैसे धुरेधर सूत की चक्र निपातै।

संक्षेप में काव्क्ष निर्माण के हेतु जान पड़ते हैं। कवि की शक्ति, उसका लोक निरीक्षण और उसका अभ्यास। तीनों में कवि की काव्य शक्ति महत्वपूर्ण है। काव्य शक्ति के दो रूप सहजा और उत्पाद्या होते हैं। उत्पाद्या के अंतर्गत कवि की निपुणता और अभ्यास दोनों आते हैं। निपुणता कवि में लोकनिरीक्षण, अनुशीलन और काव्य परंपरा अध्ययन से आती है

।लोकनिरीक्षण और शास्त्रों के अनुशीलन की कवि की सफलता के लिए आवश्यक है। अभ्यास के बिना व्यवस्थित कविता की रचना कर पाना मुश्किल है*।

****